उत्तराखण्ड़ के विशिष्ट क्षेत्र जौनसार–बावर का धार्मिक एवं सामाजिक स्वरूप

सचिन प्रधान
रूड़की (हरिद्वार)

भारत वर्ष एवं विशेषकर उत्तरांचल के सांस्कृतिक परिदृश्य में जौनसार–बावर क्षेत्र का विशेष महत्त्व है। हिमालय की रमणीक वादियों में जौनसार–बावर, देहरादून जिले का एक जनजातीय क्षेत्र है जो चकराता तहसील के अंतर्गत आता है। इसकी सीमाओं पर यमुना, टौंस, पावर और रिखनाड नदियाँ अविरल प्रवाह करती हैं। पौराणिक कथाओं से ज्ञात होता है कि जौनसार क्षेत्र, टिहरी गढ़वाल के पश्चिम में जमुना (यमुना) पार होने के कारण जमुना पार कहलाने लगा जो कालान्तर में जौनसार हो गया और उत्तर में पावर नदी के कारण यह क्षेत्र बावर कहलाया।

नगाधिराज हिमालय की ही तरह उज्ज्वल, पवित्र और ऊँची मानसिकता वाले जौनसारी लोग बेहद सरल–सौम्य व परिश्रमी होते हैं। उनका पारस्परिक सामाजिक मेलजोल और संगठनात्मक शक्ति प्रबल एवं अनूठी है। सामाजिक व्यवस्था में हर व्यक्ति की विनम्र साझेदारी सृजनात्मक है। अनेक लोक गाथाओं की क्रीडा स्थली एवं देवताओं की यह भूमि हिमालय क्षेत्र के ऐतिहासिक तथ्यों को अपने अन्दर समेटे हुए है।

जौनसार–बावर में जहाँ चार महासू देवताओं का वास है, पाण्डवों का गढ़ रहा है और ऐतिहासिक व पौराणिक परम्पराओं की अमूल्य धरोहर है, वहीं इस क्षेत्र में प्रकृति की सौन्दर्यता, टौंस, यमुना नदियों की बर्फीली–ठण्डी कल–कल करती धाराओं का बहाव तथा वन सम्पदा की प्रचुरता देखने को मिलती है। क्षेत्र के निवासियों पर पड़ोसी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के नाहन, सिरमौर, जुब्बल, चौपाल तथा टिहरी के जौनपुर एवं उत्तरकाशी के पुरोला की संस्कृति का प्रभाव पड़ा है।

धार्मिक स्वरूपः

जौनसार–बावर धार्मिक परम्पराओं की पहचान के लिये प्रसिद्ध है। महाभारत काल से जुड़ा यह क्षेत्र पांडवों की कर्मभूमि रहा है। यहाँ के लोग स्वयं को पांडव वंशज मानते हैं। महासू देवता यहाँ के आराध्य देव हैं। यहाँ शैव मत के अनुयायियों का प्रबल प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। यहाँ के लोग वाशिक महासू, बौठा महासू, पवासी महासू एवं चालदा महासू को अपना कुल देवता तथा संरक्षक मानते हैं। इनमें से पवासी महासू के अतिरिक्त शेष तीनों के उपासना स्थल इसी जनजातीय क्षेत्र में हैं। चारों महासू देवताओं का मुख्य पावन तीर्थ देवलाड़ी मेन्द्रथ से 10 किलामीटर दूर है। जौनसार–बावर के प्रसिद्ध साहित्यकार रतन सिंह जौनसारी की पुस्तक "जौनसारी लोकगीत" के प्रारम्भ में ही महासू देवता की वन्दना में सरल हृदय की ऋषितुल्य कल्याण कामना के दर्शन होते हैं–

जियन्दो जीऊ राख्या,
चुनखेन्दो घीऊ राख्या!
नीम निमाणे राख्या,
धर्म ठिकाणे राख्या
हरे राख्या वणो देवा–
भरे राख्या ताल!

सनातन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले इस क्षेत्र के लोग हिमाचल प्रदेश के जनपद शिमला की तहसील चौपाल में स्थित "बीजट महाराज", चूड़धार स्थित "शिरगुल" देव की उपासना

भी करते हैं। बावर के छजाड़, भटाड और ऐठांण में भी "शिरगुल" की उपासना होती है। इस क्षेत्र के निवासियों की ईश्वर के प्रति असीम श्रद्धा व विश्वास है। भरम और देवधार खत के लोग शिरगुल देवता के दर्शन हेतु ग्रीष्मकाल में पैदल सपरिवार चूड़धार जाते हैं। यहाँ 'शिरगुल' देवता की मूर्ति एवं अति प्राचीन शिवलिंग भी है। निःसन्तान दम्पति महासू देवता से सन्तान का वर प्राप्त करते हैं। उन्हें, मन्दिर के पुजारी, मन्दिर के मुख्य स्थल "काली पोल" से चावल के दाने आशीर्वाद स्वरूप देते हैं। निःसन्तान स्त्री इन चावलों में सवा रूपया रख कर इसे घर में पूजा स्थान पर रखती है और स्नानादि से निवृत्त होकर प्रतिदिन इसका पूजन करती है। पुत्र प्राप्ति की मन्नत पूरी होने पर माता–पिता अपने आराध्य देव के मन्दिर में जाकर पुत्र के बाल कटवाते हैं। इससे पहले घर पर केश नहीं कटाये जाते। मुंडन करवाने तक उस बालक को परिवार के लोग अपना झूठा नहीं खिलाते हैं। पुत्र प्राप्ति के लिए रेणुका देवी की आराधना भी की जाती है।

यूँ तो जौनसार–बावर में अनेक धार्मिक पर्व तथा त्यौहार मनाये जाते हैं, परन्तु यहाँ का धार्मिक जागरा अपने आप में अनूठा है और प्रत्येक देव स्थल पर मनाया जाता है। इस उत्सव के आलोक में ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक सूत्र विद्यमान हैं। पावन स्थल हनोल में देव शक्ति की परीक्षा स्पर्द्धा के साथ देवता की प्रतिमा (डोरिया) मन्दिर के अन्दर से बाहर लाने की होती है। उत्सव में शामिल सभी भक्त एक पावन नृत्य में प्रतिभाग करते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में "मुंडावना" कहते हैं। यह उत्सव हिन्दू धर्म की शक्ति, बंधुत्व की भावना एवं आस्था का प्रतीक है। प्राकृतिक दैव्य शक्ति एवं पौराणिक कथाओं का मनोवैज्ञानिक प्रभाव यहाँ के जन समुदाय को विरासत में मिला है। बच्चे के जन्म से वृद्धावस्था तक धार्मिक रीति–रिवाजों का असर दिखता है।

धार्मिक आस्था के साथ–साथ अंधविश्वास भी जौनसारी जनजाति के लोगों में बहुत देखने को मिलता है। ये लोग जन्तर–मन्तर, जादू–टोना, पूजा–पाठ में अटूट विश्वास रखते हैं। गाय, भैंस के बांझ रहने पर नाग देवता को बकरे की बलि दी जाती है। असामान्य दैविक प्रकोप से मृत्यु होने पर तड़पती दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए विशेष पूजा–पाठ कराया जाता है। प्रत्येक शुभ कार्य शादी–विवाह, मकान की बुनियाद, अस्त्र–शस्त्र की पूजा, जन्म–मरण की रस्में और दुःख–तकलीफ में धर्म की आड़ में प्राकृतिक उपचार आदि अब भी बहुतायत में प्रचलित हैं।

सामाजिक स्वरूपः

जौनसार–बावर का सामाजिक स्वरूप यहाँ की प्रचलित पारम्परिक प्रथाओं, ऐतिहासिक तथ्यों, भौगोलिक वातावरण, प्रशासनिक व्यवस्था, आर्थिक संसाधनों, सुरक्षा आदि पर दिखाई देता है। यहाँ का सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश सशक्त है। स्वभाव में सरलता एवं अतिथि सत्कार यहाँ की विशेषता है। उत्सव–प्रियता जीवन का अभिन्न अंग है। यहाँ के निवासी सच्चे, ईमानदार, कर्मठ एवं विश्वासपात्र हैं। ईमानदारी, परिश्रम और सादा जीवन यहाँ के लोगों का मूल मंत्र है। धनी परम्पराओं और सांस्कृतिक धरोहर वाले जौनसार–बावर क्षेत्र के लोगों की वेश–भूषा पर पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश के सिरमौर व जुब्बल, टिहरी जनपद के जौनपुर एवं उत्तरकाशी जनपद के पुरोला की वेशभूषा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। पुरुष चूड़ीदार पायजामा, खुले या बन्द गले का कोट, कमीज, सिर पर सूती या ऊनी गोल व नुकीली टोपी पहनते हैं। स्त्रियों की पोशाकों में लहंगा, घाघरा, कुर्ती मीर्जाई, कमजी और ढांटू (बड़ा रूमाल) शामिल हैं।

शैक्षिक स्तर में बदलाव तथा फैशन के चलते महानगर देहरादून तथा चकराता, त्यूनी, पुरोला कस्बों की जीवन–शैली के प्रभाव से नवयुवक और नवयुवतियाँ पैंट–कमीज तथा सलवार–कुर्ता पहनने लग गए हैं। भारतीय सांस्कृतिक विरासत "वसुधैव कुटुम्बकम्" की संस्कृति के यहाँ खूब दर्शन होते हैं। संयुक्त परिवार, भयमुक्त समाज, पारस्परिक सद्भावना, अपराधहीनता, आर्थिक समानता एवं स्वावलम्बन इस क्षेत्र की विशेषतायें हैं। ईमानदारी की झलक का मूल्यांकन इसी से कर सकते हैं कि यहां घरों में ताले नहीं लगाये जाते हैं। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद यहाँ कोई भूखा नहीं सोता। रूखा–सूखा ही सही लेकिन भर–पेट खाने–पीने की रोजी–रोटी सभी

कमा लेते हैं। समाज में विषमता कम दिखाई देती हैं। खून–पसीने की कमाई से लोग सन्तुष्ट रहते हैं इसलिए मानसिक तनाव कम है। शहरीकरण का प्रभाव गाँवों में अभी कम ही पहुँचा है। लोगों में हिन्दू धर्म की जागृति एवं चेतना है और प्राकृतिक शक्तियों पर बहुत अधिक आस्था रखते हैं। पूजा–पाठ और देवशक्ति पर अटूट विश्वास है। रहन–सहन पूर्णतः यहाँ के संसाधनों पर आश्रित है, जो पहले प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति इन्हीं संसाधनों से होती है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण वनों का यहाँ के निवासियों के जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

क्षेत्र के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहां के लोग खेती व अन्य कार्य मिल–जुलकर करते हैं। यदि किसी कमजोर परिवार को खेती, मकान बनवाने, विवाह–शादी या जन्म–मरण में कोई कमी या व्यवधान पड़ता है तो गाँव के सभी लोग मदद करने आते हैं। अतः इस क्षेत्र में पहले से ही व्याप्त सहकारिता की भावना के दर्शन होते हैं। बीमार व असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति की गाँव के सभी लोग मदद करते हैं। मृतक की शवयात्रा में खत (बस्ती) के प्रत्येक परिवार का कम से कम एक व्यक्ति शामिल होता है। शोक खोलने के लिये दाह संस्कार के तीसरे दिन रिश्तेदार व खत के लोग अनाज, घी एवं पैसे देकर सहयोग करते हैं। इससे स्पष्ट है कि समाज में आपसी मतभेदों का प्रायः अभाव है और ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, बड़े–छोटे जैसी विषमतायें नहीं हैं। स्वार्थ की भावना नगण्य है और लोग सन्तोषी हैं। यद्यपि स्वास्थ्य उपचार के प्रचुर आधुनिक साधन हैं परन्तु पौराणिक पारम्परिक विश्वास को अभी भी महत्त्व दिया जाता है। पूजा–पाठ, मन्त्र–तन्त्र तथा स्थानीय देवी–देवताओं में लोगों का अटूट विश्वास है। कुछ कट्टर भ्रान्तियों व अन्धविश्वासों के कारण समाज में आवश्यक बदलाव आने में अभी और समय लगेगा। यद्यपि बदलाव तेज गति से हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में जौनसर–बावर का साक्षरता प्रतिशत भारत के साक्षरता प्रतिशत से ज्यादा पीछे नहीं है। यद्यपि महिला साक्षरता मात्र 24.14 प्रतिशत है। नारी शिक्षा की यह स्थिति बहुत सोचनीय है। किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक उन्नति तभी सम्भव है जब उस समाज का नारी वर्ग सुशिक्षित हो। महिला शिक्षा का सीधा असर जन्म दर, शिशु मृत्यु दर, आर्थिक विकास एवं परिवार के स्वास्थ्य पर पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि जौनसार–बावर में नारी शिक्षा की व्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है।

गाँव में विभिन्न जाति–बिरादरी के लोग रहते हैं। नाचते–गाते समय तथा त्यौहारों पर भेदभाव प्रकट नहीं होता परन्तु कुछ खान–पान में छुआछूत की स्थिति देखने को मिलती है। यद्यपि शिक्षा के प्रचार–प्रसार के चलते अस्पृश्यता की यह भावना धीरे–धीरे समाप्त हो रही है। यद्यपि शिक्षा के विकास से क्षेत्र के बाहर पलायन एवं प्रशासनिक–राजनैतिक विकास से बदलाव आ रहा है, फिर भी सामान्यतया संयुक्त परिवार ही समाज की आधारशिला है।

जौनसारी जनजाति में हिन्दू संस्कृति के अनुरुप वर्ण व्यवस्था विद्यमान है। यहाँ मुख्य रूप से तीन वर्ग पाये जाते हैं– ब्राहमण, क्षत्रिय एवं शूद्र। सवर्ण एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का अनुपात 10:1 है। परस्पर भेदभाव न के बराबर है। बहुपति व बहुपत्नी प्रथा तथा बाल विवाह आदि अब सामान्य रूप से लुप्त हो रही हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं विकास के कारण ये प्रथायें अब लगभग समाप्ति के कगार पर हैं। आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होने के प्रयास, यहाँ की बागवानी, नकदी फसलों का उत्पादन, सर्विस (नौकरी) के क्षेत्र में बढ़ता प्रतिशत और राजनैतिक–सामाजिक व प्रशासनिक व्यवस्था के सुधार तथा जनचेतना से क्षेत्र के चहुँमुखी विकास का पथ प्रशस्त हुआ है।

देवभूमि का श्रेय प्राप्त जौनसार–बावर क्षेत्र प्राचीन धार्मिक त्यौहार व मेलों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के उत्सवों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जनजागरण का आभास होता है। सामूहिक रूप से मनाये जाने वाले इन मेलों, त्यौहारों में जहाँ एक ओर हर जाति के नर, नारी, गाँव के पंचायती

आंगन में ढोल, दमाऊ व रणसिंघे आदि स्थानीय बारह यंत्रों के साथ एकजुट होकर सामूहिक नृत्य व गीत गाते हैं, वहीं दूसरी ओर एक दूसरे को अपने–अपने घरों में जाकर भोजन कराते हैं और एकता तथा भाईचारे का प्रदर्शन करते हैं।

मुख्य त्यौहार व मेलेः–

बिस्सू – बैशाखी, 13 से 16 अप्रैल के बीच
पांचोई – दशहरा
दिवाई – दीपावली (देश में प्रचलित दीपावली के एक माह बाद)
जागरा – भादों माह–महासू देवता का मुख्य पर्व–जागरण
माघ पर्व – मौज–मस्ती एवं शिष्टाचार का पर्व
नुणाई – भेड़ों का प्रसिद्ध मेला

विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतः–

भारत – माघ माह में घर के भीतर किये जाने वाले नृत्यों के मध्यांतर में वाद–विवाद वाले पौराणिक संवाद
छोड़े – नीतिपरक लोक व्यवहार के उपदेशिक दोहे
हारुल – वीर एवं श्रृंगार रस में वृहद् वीरता व प्रणय के गीत
हईलार – मृत्यु पर वृद्ध महिलाओं द्वारा लय–बद्ध विलाप
मांगड – विवाह के मंगल गीत
लिका – बारातियों से भोजन के समय ली जाने वाली चुटकियाँ
केदारबाछा – दीवाली के पर्व में शिव 'केदार' की आस्था का बखान
जोंगू–बाजू – प्रेमी एवं प्रेमिका के उद्गारों का संदेश–संवाद
म्यूरी – प्रेम गाथा गीत
तान्दा के गीत – अर्द्ध गोलाकार समूह में लड़के–लड़कियों का सामूहिक गीत
आण्डे–पाण्डे के गीत – पुरुष–स्त्रियों द्वारा आमने–सामने के समूह गीत
भिरुड़ी गीत – दीपावली के पर्व में अखरोट–चिड़वे के आदान–प्रदान के मधुर गीत
रेणी रात गीत – जागरा एवं दीपावली के पर्व में प्रातःकाल में गाये जाने वाले गीत
गोड़ावान गीत – नेलाई–रुपाई एवं गोड़ई में गाये जाने वाला समूह गीत।

मुख्य नृत्यः

जंगबाजी, पौन्ता, रासो, हारुल, परात नृत्य, सामूहिक–मंडवणा, तान्दा के गीत पर नृत्य, देवताओं की आराधना की गाथा, मरोज (बोई दावने) के गीत और नाच जौनसार–बावर के प्रमुख नृत्य है।

आज के परिप्रेक्ष्य में जौनसार–बावर की प्राचीन सामाजिक परम्परायें तथा रीति–रिवाज लुप्त होते जा रहे हैं। शिक्षित युवा वर्ग बाहरी क्षेत्रों की तड़क–भड़क एवं व्यवहार से प्रभावित हो रहा है। पश्चिम देशों की संस्कृति का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। इन सबके बावजूद जौनसारी स्वभाव से ही सरल व सौम्य हैं। इसका सबसे बड़ा कारण उनका कृषक होना है। कृषक अन्नदाता है, समाज का पालक एवं पोषक है, वह किसी का अहित नहीं सोच सकता। उसके जीवन–दर्शन में संहार और आक्रामकता के स्थान पर विनम्रता और शांतिप्रियता का महत्त्व है। निश्चित रूप से जौनसार–बावर की प्राचीन संस्कृति, सामाजिक सरोकारों एवं धार्मिक विश्वासों की विशाल सम्पदा अपने आप में अनूठी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. जौनसार–बावर दर्शन – श्री जे.पी. सिंह राणा
2. जौनसार–बावर का सांस्कृतिक अध्ययन – श्री रतन सिंह जौनसारी
3. जौनसारी लोकगीत – श्री रतन सिंह जौनसारी
4. जौनसार–बावर, तीर्थाटन एवं पर्यटन – श्री बारु चौहान व डॉ. राजकुमारी चौहान।